International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नेपाली के गीतों में ईश्वरीय–प्रेम व आध्यात्मिकता का दर्शन

डॉ0 आर्य सिन्धु
(नेट, यूजीसी, हिन्दी)
भू0 ना0 मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

अपने ईश्वर के प्रति निष्ठापूर्वक समर्पित होने का भाव ही भक्ति है । जब एक भक्त ईश्वर में अपने मन को तन–मन की पवित्रता, स्थिरता, सौम्यता और उदारता के साथ जोड़कर आगे बढ़ता है तो उसकी भक्ति और भी सहज व सरल हो जाती है । उत्तर–छायावाद के लोकप्रिय गीतकार के रूप में शुमार गोपाल सिंह नेपाली भी एक ऐसा सच्चा भक्त कवि हैं, जिनकी रचनाओं में एक भक्त के हृदय की पुकार एवं दर्शन करने की माधुर्य अभिलाषा है –

''दर्शन दो घनश्याम, आज मोरी अँखिया प्यासी रे
मन–मंदिर की ज्योति जगा दो, घट–घट वासी रे
''दर्शन दो घनश्याम.....
मंदिर–मंदिर मूरत तेरी, फिर न देखी सूरत तेरी,
युग बीते न आई मिलन की पूरनमासी रे।''[1]

ईश्वर की दिव्यता, अलौकिकता, सर्वज्ञता और द्रवणशीलता से कवि इतना प्रभावित है कि उसका प्रेम मनुष्य, प्रकृति और देशभक्ति से होकर ईश्वरीय भक्ति में लीन हो जाता है। यही कारण है कि उन्होंने इस पूरे जगत को एक मंदिर के रूप में पेश किया है और जिसका पुजारी वे स्वयं हैं–

''पूर्ण चंद्र आरती उतारे
दीपक बन जल उठते तारे
धूम–धूम बन मेघ उड़ रहे
मलय–पवन नैवेद्य सँवारे
कवि मंदिर का बना पुजारी, दीप अखण्ड बना ध्रुवतारा।''[2]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नेपाली ने अपने गीतों में आध्यात्मिक–प्रेम को अत्यंत ही कोमल भाव में व्यक्त किया है, जिसमें जिज्ञासा, समर्पण आर निष्ठा का भाव कूट–कूट कर भरा हुआ है । वे ईश्वर से स्तुति भी मानव कल्याण के लिए करते हैं –

''देव, अगर तुम महिमा–मण्डित
जग में मानव कुण्ठित–दण्डित
उसके कर में एक दीप था
वह भी आज नियति से खण्डित
जागो देव, तिमिर पर जग के आज बहाओं ज्योर्तिधारा
युग मानव की मति में बोलो
संघ–संघ की गति में बोलो
कविता जाग रही तुम जागो
जीवन की जागृति में बोलो
फूटो तुम कवि की वाणी से, तोड़ो तुम पत्थर की कारा ।''[3]

नेपाली के भक्ति–गीतों में एक भक्त का दैन्य भी है, और एक साधक का आत्मनिवेदन भी–

''हे राम! मुझे अपनी शरण में ले लो राम
लोचन मन में जगे न हो तो युगल–चरण में ले लो राम
तुमने लाखों पापी तारे, तेरी बाजी बाजी हारे
मेरे पास न पुण्य की पूँजी, पद–पूजन में ले लो राम
हे राम! मुझे अपनी शरण में ले लो राम ।''[4]

नेपाली के गीतों की एक बड़ी शक्ति है उसकी सहजता । इस सहजता को उन्होंने अनवरत साधना से प्राप्त किया है । न केवल साहित्य बल्कि फिल्मों में भी उन्होंने इस शक्ति का प्रयोग किया है–

''ऊँ नमो शिवाय, ऊँ नमो शिवाय
आरती करो, हर–हर की करो, नटवर की
भोले शंकर की, आरती करो शंकर की
सिर पर शशि का मुकुट संवारे, तारों की पायल झंकारे
धरती अम्बर डोले ताण्डवलीला से नटवर की

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आरती करो शंकर की .....
महादेव जय–जय शिवशंकर, जय गंगाधर जय डमरूधर
हे देवों के देव मिटाओ, तुम विपदा घर–घर की
आरती करो शंकर की .....''[5]

नेपाली को भगवान शिव के प्रति बहुत ही आस्था व निष्ठा थी । वे शिव की महिमा का गुणगान करते हुए लिखते हैं –

''भोलेनाथ से निराला, गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं, कोई और नहीं
तुमने जग का कष्ट मिटाया
मुझको स्वामी क्यों बिसराया
अब तो मुझको बचाने वाला, कोई और नहीं
ऐसी बिगड़ी बनाने वाला, कोई और नहीं ।''[6]

नेपाली ने अपने भक्ति–परक गीतों में समस्त देवी–देवताओं के प्रति अपनी गहरी आस्था व्यक्त की है । चाहे वो भगवान शिव, राम और कृष्ण के गीत हों या देवी गीत । नेपाली कुल से शक्ति के उपासक रहे हैं, इसलिए वह विश्वकल्याण और मानव प्रेम की रक्षा व सुरक्षा के लिए शक्ति माँ की आरती करते है –

''मैया तेरी आरती से अन्धेरा टले।
भक्त के अन्धेरे घर में रोशनी जले ।
जय–जय भवानी
जय–जय भवानी
राजा की हवेली या निर्धन की झोपड़ी
तेरी दया है तो, वो धरती पे है खड़ी
जो तुम्हें पुकारे, उसे पाप क्या छले
जय–जय भवानी, जय–जय भवानी।''[7]

कवि की दिव्य दृष्टि का ही यह प्रतिफल है कि वह 'हरी घास' में भी असीम सत्ता की कृपा के दर्शन करता है–

''प्रभु की असीम करूणा होती है अब दे मुझे भास

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सुख, सुषमा, शोभा, सुंदरता बिखरी है मेरे आस–पास
फिर मुक्त कंठ से इन सबका गुण–गान मधुर में करू न क्यों
दी बिछा उसी ने इसीलिए मेरे आँगन में हरी घास।''[8]

वैसे तो कवि ने प्रेम की सारी ऊँचाइयों का दर्शन किया है लेकिन जब वह ईश्वर के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करते हैं तो उसका प्रेम ही मधुबन बन जाता है, जहाँ साधना के सहारे कवि सिद्धि प्राप्त करता है–

''प्रेम ही मधुवन हमारा
साधना वनवासिनी है।''[9]

डॉ. इन्दु सिन्हा ने सच ही कहा है– ''उसकी प्रेम–भावना उदस्त बनकर प्रकृति, लोक और अध्यात्म के तटों का स्पर्श करके मंगलमयी हो गई है।''[10] इसलिए कवि ईश्वर से भी यही प्रार्थना करता है कि जहाँ भी प्रेम रहे, उस स्थल की तीर्थयात्रा का सौभाग्य उन्हें मिले –

''चाहे करूँ न पुण्य जनम–भर, मिले न यश जग में अक्षय
चाहे कर पाऊँ न यहाँ मैं सोने–चाँदी का संचय
किन्तु, जहाँ भगवान प्रेम की होती है पूजा सविनय
करूँ तीर्थ यात्रा उस जग की, यह मेरे तन का निश्चय।''[11]

नेपाली ने अपने भक्ति–गीतों के माध्यम से अपने दार्शनिक और अपनी रहस्य भावना का परिचय दिया है । उनके भक्ति–गीतों में आध्यात्मिक–दार्शनिकता का दिव्य दर्शन देखने को मिलता है । यह पूरा का पूरा संसार उन्हीं ईश्वर की रचना है जिसके सहारे ये दुनिया चलती है । उस रहस्यमयी सत्ता के हाथों में ही सबों के जीवन की बागडोर है –

''घूँघट–घूँघट नैना नाचे, पनघट–पनघट छैयाँ रे
लहर–लहर हर नैया नाचे, नैया बीच खेवैया रे
ग ग ग ग ग ग
बीच गगन में बदरा नाचे, बरसे भोर प्यार के
पानी पीकर धरती नाचे, बिना किसी आधार के
चंदा नाचे सूरज नाचे, नाचे सोन चिड़ैयाँ रे
''घूँघट–घूँघट नैना नाचे, पनघट–पनघट छैयाँ रे
ग ग ग ग ग ग

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राही हो या तंग मुसाफिर रूके न पलभर पानी में
कोई चले बुढ़ापा में तो कोई चले जवानी में
होते भोर सभी चल देंगे, रहता एक नचैया रे
''घूँघट–घूँघट नैना नाचे, पनघट–पनघट छैयाँ रे

संसार की क्षणभंगुरता पर कवि कहते हैं –

''सूरज को प्राची में उगकर, पश्चिम ओर चला जाना है
रजनी को हर रोज रातभर, तारक दीप जला जाना है
फूलों को धूलों में मिलकर, जग का दिल बहला जाना है
एक फूँक के लिए, प्राण का दीप मचलता रहा रात–भर ।''[13]

उन्होंने अपनी रचना 'नीलिमा' में भी अपनी दार्शनिकता का परिचय दिया है –

''यह मोहक संसार बसाया, जड़ जंगल का मेल मिलाकर
बना दिया फिर चंचल पागल, मूर्ति–मूर्ति को सुरा पिलाकर
मिट्टी की दीवाल खड़ी कर, दो आँखों में बत्ती धर दी
मानव की सुंदर प्रतिमा में, अपनी उज्ज्वल आत्मा भर दी
निमिष–निमिष में हँसा–रूलाकर प्रेमी खेल रहा है कोई
सुघड़ सृष्टि उसके विचार हैं, निठुर प्रलय उसकी अभिलाषा
मेघ और सागर का गर्जन उसकी एक सुनिश्चित भाषा
किरणें हैं उनका हँस उठना, विश्वप्रिया के वक्षस्थल पर
है उसकी बाहों का घेरा
एक रसिक–सा फूल खिलाकर शिल्पी खेल रहा है कोई ।''[14]

सूर्य और तारे ईश्वरीय–सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति हैं । उन्होंने अपने गीतों में अपनी दार्शनिकता की अभिव्यक्ति के लिए सूर्य और नक्षत्रों को भी माध्यम बनाया उनके भक्ति–गीतों में इतनी भाव–प्रवणता, मार्मिकता और संगीतिकता व्याप्त है जो देखते ही बनता है –

''जीवन की कृश काया पर यह सुषमा का आवरण तुम्हारा
नील–नभ इस गगन–अंग पर तारों का आमरण तुम्हारा
प्राची दिशि में उठा बाल रवि, नभ में उड़े किरण के पंछी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निर्मल जल पर खिले कमल दल, कमल–कमल पर चरण तुम्हारा ।''[15]

प्रसिद्ध विद्वान डॉ. शिवशंकर पाण्डेय ने सत्य ही कहा है – ''एक ओर उनमें तुलसी के भक्तिगीतों की तन्मयता है, सूर और विद्यापति की भावप्रवणता और विद्ग्धता है तो दूसरी ओर गीत गोविन्दकार के गीतों की मादकता तथा महादेवी के गीतों की रागात्मकता व्याप्त है ।''[16]

नेपाली के भक्ति–गीत उनकी अन्तर्वेदना से निकलकर लोक जीवन की देहरी पर पहुँचे हुए सच्चे लोकगीत हैं । एक भक्त के रूप में कवि की विनम्रता सर्वत्र व्याप्त हैं –

''ओ दुनिया के मालिक राम, तेरी मरजी के हैं हम गुलाम
तुम्हें लाखों प्रणाम, कोटि'–कोटि प्रणाम !
तेरी इच्छा से हम जग में आए
सदियों से चलता है ये आना–जाना
ये जीने–मरने के काम
तेरी मरजी के हम हैं गुलाम ।''[17]

मार्मिकता, तन्मयता व निष्ठा से पूर्ण उनकी भक्ति भावना पूरी तीव्रता के साथ उनके भक्ति–गीतों में प्रस्फुटित हुई है । उनके लिए मन का भगवान ही संसार का सबसे सुंदर रूप है–

'' सौ–सौ उजियारों रातों से तेरी मुस्कान कहीं सुंदर
मुख से मुख छवि पर लज्जा की, झीनी मुस्कान कहीं सुंदर
र र र र र र र र
देवालय का देवता मौन, पर मन का देव मधुर बोले
इन मंदिर–मस्जिद गिरजा से मन का भगवान कहीं सुंदर
तेरी मुस्कान कहीं सुंदर ।''[18]

यही कारण है कि उनके भक्ति गीत अपनी गहराई व्यंजकता और नवीनता के कारण आज भी लोगों के हृदय में वास करते हैं । प्रसिद्ध विद्वान डॉ. सतीश कुमार राय ने कहा है – ''नेपाली के भक्तिपरक गीतों में अटूट आस्था भी है और सटिक फरियाद भी । अपने गीतों में वे शैव भी हैं, शाक्त भी हैं और वैष्णव भी । व्यापक ब्रह्म की तरह उनके भक्ति गीतों में भी व्यापकता है ।''[19]

कविवर नेपाली ने सच ही लिखा है –

''जनम–जनम मैंने भी ओढ़ी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लेकर श्याम चदरिया रे
लेकर उड़ी विदेश चदरिया
छूटी दूर नगरिया रे ।''[20]

संदर्भ :–

1. परिषद् पत्रिका त्रैमासिक, गोपाल सिंह नेपाली मार्च, अंक–2000 / 108
2. गोपाल सिंह नेपाली समग्र – 1 / 199
3. वही / 200
4. अलाव : नेपाली जन्मशती–विशेषांक / मार्च–अप्रैल–2012 / 409
5. परिषद् पत्रिका–गोपाल सिंह नेपाली अंक–मार्च–2000 / 106
6. वही / 106
7. वही / 107
8. गोपाल सिंह नेपाली समग्र – 1 / 91
9. परिषद् पत्रिका–गोपाल सिंह नेपाली अंक–मार्च–2000 / 168
10. वही
11. गोपाल सिंह नेपाली समग्र – 1 / 63
12. वही / 570
13. वही / 376
14. वही / 368
15. वही / 208
16. परिषद् पत्रिका–गोपाल सिंह नेपाली अंक–मार्च–2000 / 66
17. वही / 108
18. गोपाल सिंह नेपाली समग्र – 1 / 603
19. नेपाली : चिन्तन–अनुचिन्तन / 322
20. गोपाल सिंह नेपाली समग्र– 1 / 164